प्रातःक्लास 19/4/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है

ओमशान्ति। बाप ने समझाया है यह है भारत के लिए कहानी। क्या कहानी है? सुबह को अमीर और शाम को फकीर। एक कहानी है ना इस पर। सुबह को अमीर था..... यह बातें तुम जब अमीर हो तो नहीं सुनते हो। फ़कीर और अमीर के संगम पर ही सुनते हो। यह दिल में धारण करना। बरोबर भक्ति फ़कीर बनाती है, ज्ञान अमीर बनाते हैं। दिन और रात भी बेहद के हैं। फ़कीर और अमीर भी बेहद की बात है ना। बताने वाला भी बेहद का बाप है। सभी पापात्माओं को एक ही बैठ(ट)री है पावन बनने का। ऐसे चिटके तुम याद रखो तो तुम सदैव खुशी रहो। बाप कहते हैं बच्चे, तुम सवेरे अमीर बन जाते हो फिर शाम को फ़कीर बन जाते हो। कैसे बनते हो वह भी युक्ति बताते हैं। पतित फकीर से तुम पावन अमीर बनते हो। पतित से पावन, फ़कीर से अमीर बनने लिए बात ही दो है मनमनाभव , मद्याजीभव। यह भी बच्चे जानते हैं यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। तुम जो भी यहां बैठे हो निश्चय है तुम स्वर्ग़ के अमीर ज़रूर बनेंगे। बनेंगे भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। स्कूल में ऐसे होता है ना। नम्बरवार क्लास ट्रांसफर होता है। इम्तहान पूरा होता है तो दूसरे क्लास में नम्बरवार जाकर बैठते हैं। वह है हद की बातें। यह फिर है बेहद की बातें। नम्बरवार रुद्रमाला में जाते हैं। .... अथवा झाड़। बीज तो झाड़ का ही है। यह है ही मनुष्य सृष्टि का बीज। यह भी बच्चे जानते हैं झाड़ वृद्धि को कैसे पाता। पुराना कैसे होता है। आगे तुम नहीं जानते थे। बाप ने आकर समझाया है। अभी यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। अभी तुम बच्चों को पुरुषार्थ करना है। दैवी गुण भी धारण करनी है। इस पर कथाएं भी हैं। दूसरे का खम्भ निकाल अपने में डाला। खम्भ है दैवी गुणों की। और कोई चीज़ डालने की नहीं है। अपने ऊपर ध्यान देना है। याद की यात्रा से ही पवित्र बनेंगे। और कोई उपाय नहीं। बाप जो सर्व शक्तिवान बैटरी है उनसे पूरा योग लगाना है। उनकी बैटरी तो कब ढीली नहीं होती। वह सतो, रजो, तमो, में नहीं आते हैं; क्योंकि उनकी तो कर्मातीत अवस्था है। तुम बच्चे कर्मबन्धन में आते हो। कितने कड़े बन्धन हैं। बाबा के पास तो सभी समाचार आते हैं, बांधेलियां कितनी मार खाती हैं। बाप कहते हैं कि सिवाय याद की यात्रा और ज्ञान के कोई उपाय नहीं। ज्ञान भी हड्डियां नरम करती हैं। यूं भक्ति भी नर्म बनाती है। कहेंगे यह बिचारा (भक्त) आदमी है। इनमें ठगी आदि कुछ नहीं; परन्तु भक्तों में ही ठगी भी बहुत होते हैं। बाबा तो अनुभवी है ना। आत्मा शरीर द्वारा धंधा–धोरी करती है। तो इस समय इस जन्म का सभी कुछ स्मृति में आता है। 3–4 वर्ष लेकर अपनी जीवन कहानी मुनष्य को ज़रूर याद रहनी चाहिए। कई भूल जाते हैं। 10–12 वर्ष की बात भी नहीं बता सकते। बुद्धि कहती है 4 वर्ष से लेकर सारी जीवन कहानी याद रहनी चाहिए। जन्म–जन्मांतर का तो न नाम ,रूप, न कुछ भी याद रह सकता है। एक जन्म का बता सकते हैं । फोटो आदि रखते हैं। दूसरा जन्म क्या लिया यह पता थोड़े ही पड़ता है। शरीर तो फिर दूसरा मिल जाता है । हरेक आत्मा भिन्न–2 नाम–रूप में पार्ट बजाती है। नाम–रूप सब बदल जाता है । यह तो बुद्धि में है कैसे एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं। 84 जन्म, 84 नाम, 84 बाप बने हैं। अंत में फिर तमोप्रधान सम्बन्ध हो जाता है। इस समय जितना सम्बन्ध होता है उतना कभी नहीं होता। इस समय देखो किसको आठ बच्चे होंगे, तो आठ भाई–बहन होंगे। कलयुगी सम्बन्ध की बहुत ही वृद्धि होती है। इनको बन्धन ही समझना चाहिए। कितने भाई होते हैं। फिर वह शादी करे, बच्चा पैदा करे। इस समय सबसे जास्ती सम्बन्ध होता है। चाचे, काके, मामे। जितने जास्ती बच्चे उतना ही जास्ती सम्बन्ध। एक ही बार 5–5 बच्चे भी पैदा होते हैं। अखबार में पड़ा था ना। 5 बच्चे इकट्ठे जन्मे और 5 ही तन्दुरुस्त। हिसाब करो कितना सम्बन्ध बढ़ता जावेगा। बहुत ही ढेर सम्बन्ध बनते हैं। इस समय तुम्हारा है सबसे छोटा। सिर्फ़ एक बाप से सम्बन्ध। दूसरा कोई से भी तुम्हारा सम्बन्ध नहीं है सिवाय एक बाप के। एक से ही सम्बन्ध है। सतयुग फिर इससे जास्ती। हीरे जैसा जन्म अभी तुम्हारा है। हाईएस्ट बाप बच्चों को एडॉप्ट करते हैं। जीते जी गोद में जाना वर्सा पाने लिए, सो अभी (ही)

होता है। तुम ऐसे बाप के गोद में आये हो जिससे तुमको स्वर्ग़ का वर्सा मिलता है। यह है सबसे ऊँच बेहद के बाप का वर्सा। तुम ब्राह्मण कुल से ऊँच कोई है नहीं। सभी का योग एक ही साथ है। तुम्हारा आपस में भी कोई सम्बन्ध नहीं। ब्रह्मा कुमार–कुमारियां भाई–बहन का सम्बन्ध भी तोड़ देते हैं। सम्बन्ध एक से ही होना है। यह है नई बात। पवित्र होकर वापस भी जाना है। ऐसे–2 विचार–सागर–मंथन करने से तुम बहुत ही रौनक में आवेंगे। सतयुगी रौनक और कलयुगी रौनक में रात–दिन का फ़र्क है। भक्तिमार्ग है ही रावण राज्य। पिछाड़ी में साइंस का घमण्ड भी कितना होता है। जैसे कि सतयुग से भेंट रखते हैं। कल कलकत्ते से समाचार आया था बच्ची ने पूछा अभी स्वर्ग़ में हो वा नर्क में? तो 4–5 ने कहा हम स्वर्ग़ में हैं। बुद्धि में भी रात–दिन का फ़र्क पड़ जाता है। कोई समझते हैं हम तो नर्क में हैं। फिर समझाना पड़ता है अगर नर्क में हो तो फिर स्वर्ग़वासी बनना चाहते हो? स्वर्ग़ कौन स्थापन करते हैं, यह बहुत मीठी–2 बातें हैं। तुम नोट भी करते हो; परन्तु वह कॉपी में ही नोट रह जाती है। समय पर याद नहीं आता। अभी पतित से पावन कैसे बनेंगे? पावन बनाने वाला पतित–पावन परमपिता परमात्मा शिव ही है। वह कहते हैं मामेकं याद करो तो पाप कट जावेंगे। याद से कोई तो आमदनी होगा(गी) ना। याद की रसम भी अभी से निकली है। बाप की याद से तुम कितने ऊँच स्वच्छ बन जाते हो। जितनी जो मेहनत करेंगे उतना ही अच्छा पद पावेंगे। बाबा से पूछ सकते हैं। कई पूछते हैं बाबा हमारी बच्ची की दिल लगी है अभी क्या करें? चाहते हैं लव–मैरेज करें। बाप कहते हैं ऐसा है तो फिर तुमको खर्चा करने की दरकार नहीं। उनका लव–मैरेज है, तुम क्यों खर्चा करते हो? एक सारी भी देते हैं। वह जाने आपस में। इस हालत में उनकी कोई दवाई नहीं। इससे तो छूटना बड़ा ही मुश्किल है। यहां तो इस समय यह बाप तोड़ने वाला ही बहुत तीखा है। सामने कोई आते हैं तो राय दी जाती है। फिर झगड़े भी घर में बहुत हो पड़ते हैं। हर हालत में झगड़ा। विकार के लिए, धन के लिए, ज़मीनदारी के लिए झगड़ा। कोई मर जाते हैं लिख–पढ़ करके नहीं जाते हैं तो फिर झगड़ा हो पड़ता हैं। अगर स्त्री के नाम पर होगा और बच्चा जीता होगा तो भी मामला बढ़ जाता है। मारने की भी युक्ति निकाल लेते है । यहां तो कोई सम्बन्ध है नहीं। सिर्फ़ एक बाप दूसरा न कोई। बाप तो हे बेहद का मालिक। बेहद के बच्चों को सैटिसफाय करते हैं। बात तो बड़ी सहज है। उस तरफ है स्वर्ग़, इस तरफ है नर्क। स्वर्ग़वासी अच्छे वा नर्कवासी अच्छे? कोई तो कह देते हैं नर्कवासी या स्वर्ग़वासी इन बातों में हमारा क्या जाता? जो सयाने, समझू होंगे वह कहेंगे स्वर्ग़वासी अच्छे। कई स्वर्ग़–नर्क को जानते ही नहीं; क्योंकि बाप को नहीं जानते। बाप की गोद (से) निकल फिर माया के गोद में चले जाते हैं। तो ज्ञान खलास हो जाता है। वण्डर है ना। बाप भी वण्डरफुल है। ज्ञान भी वण्डरफुल है। सभी वण्डरफुल। इन वण्डर्स को समझने वाला भी ऐसा चाहिए जिसकी बुद्धि उस वण्डर में भी लगी रहे। रावण तो वण्डर नहीं है। रात–दिन का फ़र्क है। शास्त्रों में तो क्या–2 लिख दिया है। कालीदह से निकला, फिर सर्प ने डसा, काला हो गया। अभी तुम अच्छी रीत समझा सकते हो। कृष्ण के छोटे चित्र में लिखत बड़ी अच्छी है और यह चित्र पढ़े भी हैं। यह तो बच्चे जानते हैं बहुत ही छपाये थे। तो कहते थे बाबा 10 हज़ार क्यों छपाते हैं? बाबा कहते हैं बच्च(ीं) की वृद्धि होती जाती है। भाषाएं भी (वृद्धि) को पाती रहती हैं। आगे चल कर शायद 20 हज़ार छपानी पड़े। बाबा तो बच्चों के लिए ही छपाते हैं । कृष्ण के चित्र को उठाकर कोई पढ़े तो भी रिक्रेश हो जाये। 84 जन्मों की कहानी है। जैसे कृष्ण के वैसे तुम.....स्वर्ग़ में तो तुम भी आते हो ना। त्रेता में भी आते रहते हैं। ऐसे नहीं त्रेता में जो राजा होते हैं वह त्रेता में ही आवेंगे। पढ़े आगे अनपढ़े जो फेल होते हैं उनको भरी ढोनी पड़ेगी। यह ड्रामा का राज़ बाप ही जान सकते हैं। अभी तुम समझते हो तुम्हारे मित्र–सम्बन्धी आदि सभी नर्कवासी हैं। वैश्यालय के रहने वाले हैं। हम पुरुषोत्तम संगमयुगी हैं। अभी पुरुषोत्तम बन रहे हैं। बाहर में रहने में और यहां सात रोज़ रहने में बहुत फ़र्क पड़ता है। हंसों की संग से निकल फिर बगुलों के संग में चले जाते हैं। बहुत बिगाड़ने वाले भी होते हैं।

समाचार तो सभी बाबा के पास आते हैं ना। बहुत बच्चे मुरली की भी परवाह नहीं करते। बाप समझाते हैं ऐसी गफ़लत नहीं करना चाहिए। तुमको तो ऐसा खुशबुएंदार फूल बनना है। रईत (रइयत) का बुद्धियोग अपने बादशाह रानी से ही होगा ना। यहां भी ऐसे होता है। मीठे–2 बच्चों को रोज़ समझाते हैं। सिर्फ़ एक ही बात तुम्हारे लिए काफी है। याद की यात्रा। यहां तुमको संग तो ब्राह्मणों का ही है। कहां तुम ऊँच ते ऊँच, कहां वह नीच। बहुत बच्चे लिखते हैं बाबा बगुलों के झुण्ड में हम हंस क्या करेंगे? कांटा ही लगाते रहते हैं। कितनी मेहनत करनी पड़ती है निकालने लिए। बाप की श्रीमत पर चलने से पद भी ऊँच मिलेगा। हंस होकर रहो। बगुलों के संग में बगुला न बन जाओ। आश्चर्यवत कथन्ति सुनन्ति.....यह गायन है ना। कुछ न कुछ थोड़ा–बहुत अन्दर में नॉलेज हो तो स्वर्ग़ में तो आवेंगे ना; परन्तु कितना फ़र्क पड़ जाता है। सज़ाएं भी बहुत कड़ी खावेंगे। वह तो होते हैं ऑर्डीनरी सज़ा। यह तो 100% जास्ती सज़ा मिलती है। बाप कहते हैं तुम मेरी मत पर न चल पतित बनते हो तो 100वां डण्ड पड़ जाता है। मेरी निन्दा कराते हो। बगुलों तरफ गये तो वह खुश होंगे। तो ऐसे पर फिर डंड बहुत पड़ जाता है। चण्डाल का जन्म। वह भी तो चाहिए ना। राजाई स्थापन हो रही है ना। यह बातें भी बच्चे भूल जाते हैं। यह भी याद रहे तो भी ऊँच पद पाने लिए पुरु0 करो। नहीं करते हैं तो समझा जाता है एक कान से सुना और दूसरे से निकाला। बाप से योग है नहीं। बगुलों के साथ है। यहां रहते भी बुद्धियोग बाल–बच्चों तरफ चली जाती है। बाप तो कहते हैं सभी कुछ भूल जाना है। इसको कहा जाता है वैराग्य। उसमें भी परसेन्टेज है। कहां न कहां खयालात चली जाती है। लव मैरिज भी में भी बह(हु)त लव हो जाता है तो बुद्धि लटक पड़ती है। बाप रोज़ समझाते रहते हैं इस पुरानी दुनियां में रहते हुये इनको भूल जाओ। इन आँखों से तुम जो कुछ देखते हो यह सभी ख़त्म हो जाना है। बुद्धि का योग नई दुनियां में रहे। बेहद के नई दुनियां के बेहद के सम्बन्धों से बुद्धि योग रखना है। यह माशुक भी वण्डरफुल है। भक्तिमार्ग में भी तुम गाते आये हो आप जब आवेंगे तो हम आपके सिवाय किसको याद नहीं करेंगे। अभी मैं आया हूँ। तुम मुझे ऐसे कहते थे ना भक्तिमार्ग में। तो अभी और सभी तरफ से बुद्धि हटाना पड़े। यह सभी जैसे मिट्टी में मिल जाना है। तुम्हारा जैसे मिट्टी के साथ बुद्धियोग है। मेरे साथ बुद्धियोग होगा तो मालिक बन जावेंगे। बाप कितना समझदार बनाते हैं। मनुष्य थोड़े ही जानते हैं कि भक्ति क्या है, ज्ञान क्या है। अभी तुमको ज्ञान मिला है तब भक्ति को भी समझते हो। अभी तुमको फीलिंग आती है भक्तिमार्ग में कितना दुःख है। मनुष्य तो भक्ति करते हैं। अपन को बहुत ही सुखी समझते हैं। फिर भी कहते हैं भगवान आकर फल देंगे। किसको, कैसे फल देंगे वह कुछ नहीं समझते। अभी तुम समझते हो बाप भक्ति का फल देने आये हैं। विश्व की राजधानी का फल जिस बाप से मिलता है, वह बाप जो डायरैक्शन देते हैं उस पर चलना पड़े ना। इसको कहा जाता है श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ ऊँच मत। मिलती तो सभी को है ना। फिर कोई चल सकते हैं, कोई नहीं चल सकते हैं। बेहद की बादशाही स्थापन होती है। तुम अभी समझते हो हम क्या थे, अभी क्या हालत है। माया एकदम नीचे गिरा देती है। यह तो है जैसे कि मुर्दों की दुनियां। बाप खुद कहते हैं यह है घमण्डों की दुनियां। भक्तिमार्ग में तो तुम जो सुनते थे सभी सत्य–2 करते थे। अभी तुम कहां सतसंग आदि में जो कुछ सुनेंगे तो हंसते रहेंगे। यह नॉनसेंस कितना झूठ बोलते हैं। सभी झूठ ही झूठ सुनाते रहते हैं। सच्च तो एक बाप ही सुनाते हैं। तो जैसे कि बाप को याद भी करना चाहिए। यहां कोई बाहर वाला बैठा हो तो उनके समझ में नहीं आवेगा। कहेंगे पता नहीं यह क्या सुनाते हैं। सारी दुनियां कहती है आत्मा सर्वव्यापी है। यह कहते हैं वह बाप है। कांध से ना ना करते रहेंगे। तुम्हारे अन्दर से हां हां निकलती रहेगी; इसलिए नये को एलाउ नहीं किया जाता है। अच्छा, मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति रूहानी बाप दादा का य(ा)(द)–प्यार गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बा(प) का नमस्ते। ओमशान्ति।